# DEPARTMENT OF ECONOMICS
## D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
### LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA (BIHAR)

---

By :- Dr. Raman kumar Thakur
Assistant Professor(Guest )
Mo. No. :- 9430640318(Whatsapp)
e-mail :- ramankumar_2011@rediffmail.com

**B.A. Part - I(H)**
**Date :- 01.04.2020 - 03.04.2020**

**राष्ट्रीय आय क्या है ? इसके माप के विभिन्न विधियों का वर्णन कीजिए।**

वर्तमान में प्रत्येक अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय की गणना एवं इससे संबंधित समस्याओं के अध्ययन का महत्त्व बहुत अधिक बढ़ गया है | किसी भी अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास इसकी विकास संबंधित गतिविधियों एवं परिवर्तनों को मापने का यह सबसे प्रचलित तरीका है। परंपरावादी एवं नव परंपरावादी अर्थशास्त्रियों ने राष्ट्रीय आय की गणना के अध्ययन को अधिक महत्व नहीं दिया है | परंपरावादी अर्थशास्त्री मार्शल आदि ने केवल वितरण प्रक्रिया के संबंध में ही राष्ट्रीय आय का अध्ययन किया है | परंतु 1930 की महामंदी(Great Depression) तथा 1936 में प्रकाशित केंस(Keynes)की पुस्तक "रोजगार, ब्याज एवं मुद्रा का सामान्य सिद्धांत" (General theory of employment, interest and money)ने अर्थशास्त्रियों का ध्यान सामूहिक अर्थशास्त्र की समस्याओं जैसे:- राष्ट्रीय आय ,रोजगार, उत्पादन ,कुल निवेश ,कुल बचत के अध्ययन की ओर ध्यान आकर्षित किया है | वर्तमान में सभी अर्थव्यवस्था एवं समस्त अर्थशास्त्रियों द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना एवं इससे संबंधित समस्याओं के अध्ययन को विशेष महत्व दिया जाता है |

**परिभाषा(Definition):-**

राष्ट्रीय आय व्यक्तिगत आयो का योग है | व्यक्तिगत आय वह आय होती है जो कोई व्यक्ति अपनी वर्तमान सेवाओं के बदले या अपनी संपत्ति से प्राप्त करता है | इस प्रकार राष्ट्रीय आय एक प्रवाह(flow)है जो पूंजी से भिन्न है! क्योंकि पूजी एक कोश (fund)है। पुंजी उस धन को कहते हैं जिसका उपयोग उपभोग न करके उत्पादन हेतु किया जाता है | परंतु राष्ट्रीय आय एक प्रवाह के समान है जो बराबर उत्पन्न होती है तथा उपभोग की जाती है |

अर्थशास्त्रियों द्वारा दी गई परिभाषा में कोई भी परिभाषा अपने आप में परिपूर्ण एवं सर्वमान्य नहीं है | फलतः राष्ट्रीय आय की परिभाषा का चयन इस बात पर निर्भर करेगा कि राष्ट्रीय आय की गणना का उद्देश्य क्या है ? प्रोफेसर मार्शल की परिभाषा "किसी देश की प्राकृतिक साधनों साधनों पर श्रम(Labour)पूंजी लगाए जाने से प्रत्येक वर्ष भौतिक एवं अभौतिक पदार्थों तथा सरकार की सेवाओं का एक निश्चित वास्तविक योग प्राप्त होता है यही देश की विशुद्ध वास्तविक आय राष्ट्रीय लाभांश है | प्रोफेसर पीगु (pigou) की परिभाषा



Scanned with CamScanner

By :- Dr. Raman kumar Thakur
Assistant Professor(Guest )
Mo. No. :- 9430640318(Whatsapp)
e-mail :- ramankumar_2011@rediffmail.com

राष्ट्रीय आय या लाभांश देश के लोगों की वस्तुगत आय का वह भाग है जिसमें विदेशों से कमाई गई आय भी सम्मिलित है जो मुद्रा में मापी जा सकती है प्रोफ़ेसर पीगु की परिभाषा में मार्शल की परिभाषा के दोषों को सुधार कर एक नया दृष्टिकोण दिया है । प्रोफेसर पीगु के अनुसार "राष्ट्रीय आय में केवल उन्हीं वस्तु को शामिल किया जाता है जिन्हें मुद्रा द्वारा मापा जा सकता है । "इसी प्रकार प्रोफ़ेसर पीगु के अनुसार विदेशों से प्राप्त आय को भी राष्ट्रीय आय में शामिल किया जा सकता है। इस प्रकार प्रोफेसर पीगु की परिभाषा मार्शल की परिभाषा की अपेक्षा राष्ट्रीय आय की गणना हेतु अधिक सुविधाजनक एवं व्यवहारिक परिभाषा है । क्योंकि इस परिभाषा से राष्ट्रीय आय की दोहरी गणना की संभावना नहीं रहती है । प्रोफेसर फिशर की परिभाषा "राष्ट्रीय लाभांश या आय मे केवल वही वस्तु शामिल की जाती है जो अंतिम रूप से उपभोक्ताओं को प्राप्त होती है । भले ही यह वस्तु भौतिक अथवा मानवीय वातावरण में प्राप्त हुई है "प्रोफेसर फिशर ने राष्ट्रीय आय की गणना हेतु उत्पादन की अपेक्षा उपभोग को आधार माना है इस प्रकार प्रोफेसर फिशर के अनुसार राष्ट्रीय आय में वह सब वस्तुएं एवं सेवाएं शामिल करनी चाहिए जो कि किसी वर्ष में उत्पन्न तो की जाती है । परंतु उसका उपभोग उन वर्ष में नहीं किया जाता वस्तुओं एवं सेवाओं के उस भाग को ही राष्ट्रीय आय में शामिल करना चाहिए जिनका उस वर्ष में उपभोग किया जाता है।

*राष्ट्रीय आय की गणना तीन विधियों से की जा सकती है जो इस प्रकार से है:-

(1)उत्पादन संगणना विधि (Census of production method)राष्ट्रीय आय की गणना कि इस विधि को सूची गणना विधि (Inventory method),औद्योगिक उद्गम पद्धति (industrial origin method)भी कहते हैं । इस विधि के अंतर्गत उत्पादन द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना की जाती है किसी अर्थव्यवस्था में एक निश्चित अवधि में वस्तुओं तथा सेवाओं का जो कुल उत्पादन होता है इसके कुल मूल्य का जोर लगा लिया जाता है । कुल मूल्य का जोड़ लगाते समय दोहरी गणना से बचने का प्रयास किया जाता है इसके लिए अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों जैसे कृषि, उद्योग ,व्यापार ,वाणिज्य ,बैंकिंग ,परिवहन ,बीमा आदि के अंतर्गत उत्पादित अन्य पदार्थों के मूल्य को ही जोड़ा जाता है इस प्रकार जो योग आता है उसे कुल राष्ट्रीय आय(Gross national income) कहा जाता है कुल राष्ट्रीय आय में से मशीनों के घिसाई टूट-फूट तथा प्रचलन खर्च घटाकर विशुद्ध राष्ट्रीय आय(Net national income) ज्ञात की जा सकती है ।



Scanned with CamScanner

By :- Dr. Raman kumar Thakur
Assistant Professor(Guest )
Mo. No. :- 9430640318(Whatsapp)
e-mail :- ramankumar_2011@rediffmail.com

(2) आय संगणना विधि(Census of income method)राष्ट्रीय आय की गणना की इस विधि को आय प्राप्त विधि(Income Received method) आय प्रवाह रीती (Earning flow method) तथा वर्गीकृत आयोग के अनुसार राष्ट्रीय आय गणना की विधि भी कहा जाता है। इस विधि द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना करते समय देश के विभिन्न वर्गों द्वारा एक निश्चित अवधि में प्राप्त आय को जोड़ लिया जाता है। उदाहरण के लिए राष्ट्रीय आय में भूमि से प्राप्त लगान ,उद्यमियों को लाभ ,मजदूरों को मजदूरी ,पूंजीपतियों को प्राप्त ब्याज ,आदि को जोड़ा जाता है ।प्रोफेसर शुप(Shup)ने इस योग को साधन भुगतान योग (Factor payments total)कहा है।व्यय गणना विधि (Census of expenditure method) इस विधि के अनुसार राष्ट्रीय आय की गणना एक निश्चित अवधि में किए जाने वाले कुल खर्च के आधार पर की जाती है किसी भी देश में व्यक्ति अपनी आय को या तो उपभोग वस्तुओं पर या निवेश वस्तुओं पर खर्च करते हैं इस विधि द्वारा कुल राष्ट्रीय खर्च का अनुमान व्यक्तियों द्वारा उपभोग निवेश वस्तुओं पर किए जाने वाले खर्च तथा सरकार द्वारा किए जाने वाले कुल खर्च को जोड़ लिया जाता है यह कुल राष्ट्रीय खर्च बाजार कीमतों पर सदैव कुल राष्ट्रीय आय के बराबर होता है उन राष्ट्रीय आय में चार प्रकार के खर्च शामिल होते हैं :-

(1) निजी उपभोग पर व्यय

(2)कुल घरेलू निजी निवेश

(3) शुद्ध विदेशी निवेश

(4)सरकारी व्यय



Scanned with CamScanner